IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

द्विवर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम के विभिन्न मानकों के प्रति छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

मोहित कुमार[1]
शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन

डॉ० मिताली बजाज[2]
सहायक प्राध्यापक
शोध केन्द्र महाराजा महाविद्यालय,
उज्जैन मध्य प्रदेश

सारांश :—द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम को लागू हुए अभी दो वर्ष ही हुए है, जिससे छात्राध्यापकों के ऊपर नई और अतिरिक्त जिम्मेदारियां भी आई है। अतः छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण में एक साथ परिवर्तन होना सम्भव नहीं है। उपरोक्त चुनौतियों के उपरान्त भी छात्राध्यापकों में द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं है। समय के साथ–साथ छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण और अधिक सकारात्मक होने की सम्भावना है।

प्रमुख शब्दः— द्विवर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम, छात्राध्यापक।

प्रस्तावना :—

शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से बना है। जिसका अर्थ है। सीखना और सिखाना। शिक्षा शब्द में भी दोनो भाव निहित है। सीखने के अर्थ में शिक्षा प्राप्त करना और सिखाने का अर्थ, शिक्षा प्रदान करना है। शिक्षा के लिए अंग्रेजी में Education शब्द का प्रयोग किया जाता है इस Education शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के तीन शब्दो से मानी गई है। एक दृष्टिकोण के अनुसार Education शब्द लैटिन भाषा के शब्द Educare से निकला है। जिसका अर्थ है। 'पालन–पोषण करना' । एक अन्य दृष्टिकोण के अनुसार 'Education' शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'Educate' से निकला है। जिसका अर्थ है विकसित करना अथवा निकालना। तीसरे दृष्टिकोण के अनुसार Education शब्द लैटिन भाषा के शब्द Education से निकला है। जिसका अर्थ है, पढ़ाने अथवा सिखाने की क्रिया।

शिक्षा एक जीवन भर चलने रहने वाली प्रक्रिया है यह कभी समाप्त नहीं होती है। यह व्यक्ति के जन्म के साथ शुरू होती है तथा उसके जीवन के अन्तिम समय तक चलती रहती है। शिक्षा किसी व्यक्ति को वास्तविक मनुष्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही 'मनुष्य' बन जाता है। आज के युग में शिक्षा सभ्यता का पर्याय बन चुकी है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः

हमारे देश में प्राचीन काल से ही शिक्षा को विशेष महत्व प्रदान किया गया है किसी भी प्रकार की प्रगति में शिक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को विकास के मार्ग पर पहुँचाया जा सकता है। इसीलिए स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान में शिक्षा को मूल अधिकार का दर्जा दिया गया है। इसके साथ–साथ नीतिगत दस्तावेजों में शिक्षा को बाल–केन्द्रित अनुभव आधारित एवं स्वतन्त्र व चेतना के विकास में उत्प्रेरणा के रूप में देखा गया है।

समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर पर एवं राज्यों में विद्यालयी पाठ्यचर्या के पुनरावलोकन और पुनरीक्षण के माध्यम से इन मूल्यों के पोषण का प्रयत्न भी किया जाता रहा है। अध्ययन शिक्षा की रूपरेखा पर भी समय–समय पर विद्यालयी शिक्षा के सन्दर्भ में किये गये प्रयोगों एवं पुनरीक्षणों का प्रभाव है। यद्यपि यह प्रभाव अभी भी सैद्धान्तिक रूप से नीतिगत दस्तावेजों तक ही सीमित रहा है। इन कार्यक्रमों में तो विद्यालय एवं समाज से जुड़े व्यापक और सम सामायिक मुद्दों पर चर्चा करने का पर्याप्त अवसर होता था। न ही नये प्रकार के शैक्षणिक अनुभवों एवं विचार विमर्श के लिए समुचित सम्भावना। विगत कुछ वर्षो में सैद्धान्तिक रूप से भले ही छात्र–केन्द्रित शिक्षा प्रक्रिया की चर्चा होने लगी है। विभिन्न विद्वानों के शिक्षा के विषय में भिन्न भिन्न मत दिखायी देते हैं–

एच0एच0 हार्न ने लिखा है :–"मानव द्वारा प्रकृति अपने साथियों व विश्व की चरम सत्ता के साथ सामजस्य स्थापित करना ही शिक्षा है।"

प्लेटो ने कहा है :–"शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतों के द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करती है।"

द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम शिक्षा स्नातक कार्यक्रम जिसे सामान्यतः बी0एड0 कार्यक्रम कहा जाता है, एक संवृहितक पाठ्यक्रम है जो उच्च प्राथमिक अथवा मिडिल स्कूल (कक्षा 6 से8 तक) माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 10) के लिए अध्यापक तैयार करता है। वर्तमान सत्र 2019–20 से बी0एड0 पाठ्यक्रम राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा न्यूनतम दो शैक्षणिक वर्ष की अवधि को लागू कर दिया गया है।

अध्ययन के उद्देश्यः–

- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के विभिन्न मानकों के प्रति छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के प्रति छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के प्रायोगिक क्रियाकलाप के प्रति छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के स्कूल स्थानाबद्ध प्रशिक्षण के प्रति छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के उपरोक्त विभिन्न मानकों के प्रति अनुदानित और निजी बी0एड0 महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के विभिन्न मानकों के प्रति छात्राध्यापकों का सकारात्मक दृष्टिकोण होगा।
- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के प्रति छात्राध्यापकों का सकारात्मक दृष्टिकोण होगा।
- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के प्रयोगिक क्रियाकलाप के प्रति छात्राध्यापकों का सकारात्मक दृष्टिकोण होगा।
- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के स्कूल स्थानाबद्ध प्रशिक्षण के प्रति छात्राध्यापकों का सकारात्मक दृष्टिकोण होगा।
- द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के उपरोक्त विभिन्न मानकों के प्रति अनुदानित और निजी बी0एड0 महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण में तुलनात्मक दृष्टि से सार्थक अन्तर नहीं होगा।

अध्ययन विधि — प्रस्तुत अध्ययन में ''**वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि**'' का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या— अध्ययन में जनसंख्या के रूप में दयालबाग शिक्षा संस्थान के शिक्षा संकाय से 75 छात्राध्यापकों एवं डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय से सम्बन्द्ध महाविद्यालयों से 75 छात्राध्यापकों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया।

न्यादर्श— प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 100 छात्राध्यापकों का चयन किया गया।

उपकरण के निर्माण की प्रक्रियाः— उपकरण का निर्माण करने से पूर्व शोधकर्त्ता ने मापन एवं मूल्याकन पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया, ताकि शोधकर्ता उपकरण निर्माण की प्रक्रिया से परिचित हो सके। इसके अतिरिक्त शोधकर्ता ने अन्य दृष्टिकोण मापनी के प्रारूपों का भी अध्ययन किया, तत्पश्चात् दृष्टिकोण मापनी का निर्माण किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या योजनाः— शोध के उद्देश्यों को ध्यान मे रखते हुए प्रदत्तों का सारणीयन किया तथा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय प्रविधियों की सहायता से प्रदत्तों का विश्लेषण किया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु शोधार्थी ने वर्णनात्मक एवं निष्कर्षात्मक दोनों प्रकार की सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया।

अध्ययन की सांख्यिकीय प्रविधियाँः— प्रस्तुत आँकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय प्रविधियों का मध्यमान मानक विचलन के बीच मध्य अन्तर को ज्ञान करने के लिए टी.परीक्षण का प्रयोग किया ।

द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के विभिन्न मानकों के प्रति छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन।

छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के विभिन्न मानकों के प्रति दृष्टिकोण

क्र.सं	आयाम	N	M	SD
1	विभिन्न मानकों के प्रति दृष्टिकोण	100	32.94	5.09
2	सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण	100	26.1	4.45
3	प्रायोगिक क्रियाकलाप के प्रति दृष्टिकोण	100	32.73	5.18
4	स्कूल स्थानाबद्ध प्रशिक्षण के प्रति दृष्टिकोण	100	33.48	5.58
5	सम्पूर्ण बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण	100	125.25	13.99

द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के विभिन्न मानकों, सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम, प्रायोगिक क्रियाकलाप, स्कूल स्थानाबद्ध प्रशिक्षण के प्रति छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया है।

द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के विभिन्न मानकों के प्रति छात्राध्यापकों का दृष्टिकोण ज्ञात करने हेतु कुल 9 प्रश्नों को सम्मिलित कया गया था। अतः इस आयाम या पक्ष में न्यूनतम ऋणात्मक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करने हेतु 9 अंक, उच्चतम् धनात्मक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करने हेतु 45 अंक सम्भावित है तथा 27 अंक उदासीन दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते है।

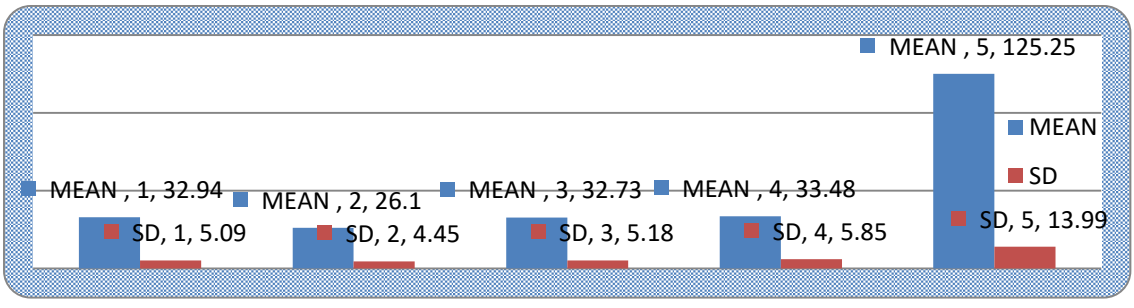

महिला व पुरूष छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के मानकों के प्रति दृष्टिकोण

शिक्षक	N	M	SD	T
महिला	82	32.82	5.27	0.99
पुरूष	18	33.44	4.27	

द्विवर्षीय बी.एड. के मानकों के प्रति महिला व पुरूष छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण को देखा गया। है कि 't' का मान 0.99 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.05 को सारणी मान 1.98 से कम है। अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

महिला व पुरूष छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण

शिक्षक	N	M	SD	T
महिला	82	25.93	4.3	1.23
पुरूष	18	26.83	5.10	

द्विवर्षीय बी.एड. के सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के प्रति महिला व पुरूष छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण को देखा गया। है कि "t" का मान 1.23 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से कम है। अर्थात् छात्राध्यापक होने से द्विवर्षीय बी.एड. के सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के प्रति उनके दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं पड़ता है

महिला व पुरूष छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के प्रायोगिक क्रियाकलाप के प्रति दृष्टिकोण

शिक्षक	N	M	SD	T
महिला	82	32.13	4.89	2.00
पुरूष	18	30.88	6.14	

द्विवर्षीय बी.एड. के प्रायोगिक क्रियाकलाप के प्रति महिला व पुरूष छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण को देखा गया। है कि "t" का मान 2.00 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से अधिक है। अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

महिला व पुरूष छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के स्कूल स्थानाबद्ध प्रशिक्षण के प्रति दृष्टिकोण

शिक्षक	N	M	SD	T
महिला	82	33.40	5.92	0.87
पुरूष	18	33.83	3.74	

द्विवर्षीय बी.एड. के स्कूल स्थानाबद्ध प्रशिक्षण के प्रति महिला व पुरूष छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण को देखा गया। है कि 't' का मान 0.87 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से कम है। अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

महिला व पुरूष छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण

शिक्षक	N	M	SD	T
महिला	82	125.30	15.02	0.73
पुरूष	18	125	8.02	

द्विवर्षीय बी.एड के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण महिला व पुरूष छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण को देखा गया। है कि 't' का मान 0.73 है जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से कम है। अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुदानित व निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के मानक के प्रति दृष्टिकोण

संस्थान	N	M	SD	T
अनुदानित	50	124.56	17.66	1.01
निजी	50	125.94	9.08	

द्विवर्षीय बी.एड. के अनुदानित व निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों का मानकों के प्रति दृष्टिकोण देखा गया। है कि 't' का मान 1.01 है जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से कम है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

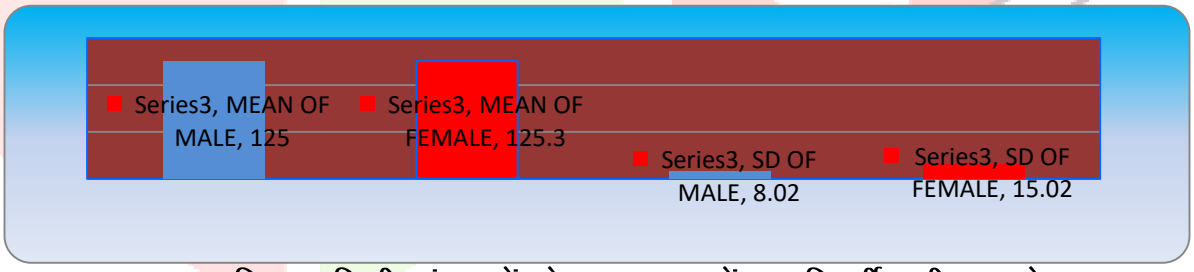

अनुदानित व निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण

संस्थान	N	M	SD	T
अनुदानित	50	25.34	4.04	2.04
निजी	50	26.86	4.73	

द्विवर्षीय बी.एड. के अनुदानित व निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों का सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण देखा गया। तालिका–8 के अवलोकन से स्पष्ट है कि 't' का मान 2.04 हैं जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से अधिक है। अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

अनुदानित व निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के प्रायोगिक क्रियाकलाप के प्रति दृष्टिकोण

संस्थान	N	M	SD	T
अनुदानित	50	32.98	5.12	1.01
निजी	50	32.48	5.27	

द्विवर्षीय बी.एड के अनुदानित व निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों का प्रायोगिक क्रियाकलाप के प्रति दृष्टिकोण देखा गया। है कि 't' का मान 1.01 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से कम है। अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुदानित व निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के स्कूल स्थानाबद्ध प्रशिक्षण के प्रति दृष्टिकोण

संस्थान	N	M	SD	T
अनुदानित	50	33.24	5.86	0.96
निजी	50	33.72	5.34	

द्विवर्षीय बी.एड. के अनुदानित व निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों का स्कूल स्थानाबद्ध प्रशिक्षण के प्रति दृष्टिकोण देखा गया। है कि 't' का मान 0.96 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से कम है। अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुदानित व निजी संस्थानां के छात्राध्यापकों का द्विवर्षीय बी.एड. के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण

संस्थान	N	M	SD	T
अनुदानित	50	124.56	17.66	1.01
निजी	50	125.94	9.08	

द्विवर्षीय बी.एड. के अनुदानित व निजी संस्थानों के छात्राध्यापकों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के दृष्टिकोण देखा गया। है कि 't' का मान 1.01 है, जोकि सार्थकतर स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से कम है। अर्थात् मध्यमानों में सार्थकता अन्तर नहीं है।

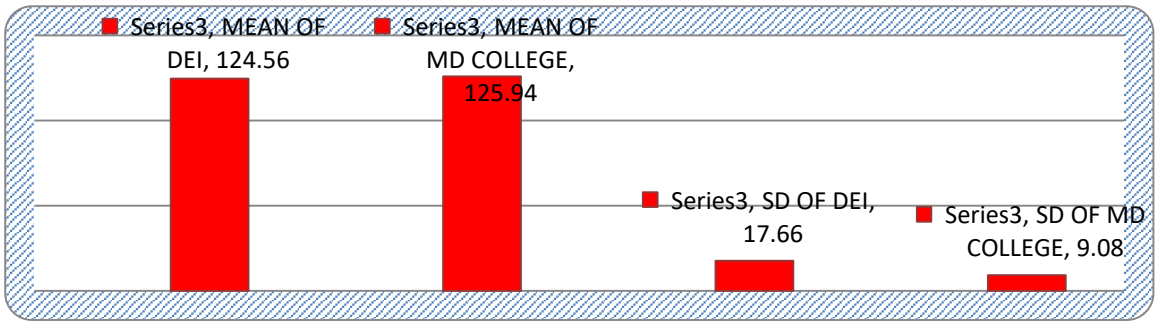

शैक्षिक निहितार्थ :— समाज में शिक्षक का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को वैदिक परम्पराऐं, ज्ञान एवं तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है। आज से सैकड़ों साल पहले यह माना जाता था कि शिक्षक को भगवान ने कुछ विशिष्ट गुण दिये है अतः ये लोग ही शिक्षण कार्य कर सकते है लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह माना जाता है कि एक शिक्षक को प्रशिक्षित करके इसमें शिक्षण कौशलों को विकसित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध के विभिन्न अवधि के बी0एड0 कार्यक्रमों को दृष्टिकोण रखते हुए विद्यालय प्रमुख शिक्षक–प्रशिक्षको, शिक्षाविदों एव शिक्षा नियोजकों के साक्षात्कार के माध्यम से उनके अभिमतों को जान सकेंगे। इन अभिगतों के विश्लेषण के आधार पर शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँच सकेगा, कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि में परिवर्तन करने से शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के शिक्षण कौशलों, शिक्षण दक्षताओं, शिक्षण अभियोग्यताओं टी0ई0टी0 में निष्पत्ति आदि प्रभावित होती है अथवा नहीं। साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि प्रशिक्षित शिक्षकों की गुणवत्ता तथा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के व्यापारीकरण की समस्याओं के समाधान के किस सीमा तक उपयोगी सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची

- एजूकेशन हंस भवन (विंग–2), 1 बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली।
- कौल, लोकेश, (2005), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिकेशन, बरेली
- कपिल एच.के. (1985), अनुसंधान विधियाँः हर प्रसाद भार्गव बुक हाऊस, आगरा
- कैरीकूलम फ्रेमवर्क : द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम : नेशनल कॉसलिंग फॉर टीचर
- गुप्ता, एस.पी. और गुप्ता अल्का सांख्यिकीय विधियाँ, दीप एण्ड दीप प्रकाशन, नई दिल्ली।
- बेस्ट,जे.डब्लयू (1963)रिसर्च इन एजूकेशनल, मुम्बई प्रिंटिग हॉल ऑफ इण्डिया प्र. लि.।
- .भारतीय आधुनिक शिक्षा, त्रैमासिक वर्ष 25, संयुक्तांक 1–2, 2006
- सी.ब्रैड्रोटीस सीवी ऑन हर बेवसाइट
- राय पारसनाथ तथा राम सी.पी. (1973) 2010, 2011 लक्ष्मी नारायण अगवाल, मुडक तन्वी ऑफसेट प्रिन्टर्स, आगरा।